IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 5, September-October 2024

Impact Factor: 7.394

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105031

भारत-चीन संबंध के बदलते आयाम

Hanuman Ram Suthar

Net in Political Science, Nimbala (Kharawala) Tehsil- Chohtan, Barmer, Rajasthan, India

शोध सारांश: भारत व चीन एक लम्बी अवधि से एक-दूसरे को सामरिक, आर्थिक एवं कूटनीतिक दृष्टि से पीछे करने के लिए प्रयत्न करते आ रहे हैं तथा एशिया में अपने वर्चस्व को लेकर उलझ रहे हैं। आज के राजनीति में चल रहे संक्रमण काल में भारत-चीन संबंधों की नई पहल का महत्व दोनों देशों के हितों के लिए ही नहीं, अपितु तृतीय विश्व के विकासशील देशों के हितों के लिए भी आवश्यक है।

भारत और चीन साथ मिलकर दुनिया की आबादी का लगभग चालीस प्रतिशत हिस्सा हैं। उनका रिश्ता लगभग तीन अरब लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। यह उनके पड़ोस के देशों और बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए भी परिणामी है। 1962 के युद्ध के बाद दोनों देश हिमालय की सीमा पर उच्च स्तर की सैन्य स्थिरता बनाए रखने में सफल रहे हैं। फिर जून 2020 में लद्दाख के गलवान में एक झड़प में भारतीय और चीनी सैनिक घायल हुए और मारे भी गए। दोनों पक्षों ने सेना की मुस्तैदी बढ़ाई और एक दूसरे के क्षेत्रों में अतिक्रमण करने का संकेत भी दिया।

बातचीत की एक श्रृंखला के बावजूद वे सीमा के दोनों ओर जमा हुए लगभग पचास हजार सैनिकों को हटाने में असमर्थ रहे लगभग उतने ही सैनिक 1962 के युद्ध में भी तैनात किए गए थे। दोनों देशों के बीच छह दशकों की सापेक्षिक शांति कुछ ही हफ्तों में खत्म हो गई। लद्दाख संकट से पता चलता है कि भारत-चीन संबंध उससे कहीं अधिक जटिल है जितना कि अधिकांश पर्यवेक्षक समझते रहे हैं या स्वीकार करते हैं। उनके मध्य की वर्तमान कठिनाइयों को युद्ध की स्मृति और अशांत सीमा के रूप में वर्णित करना स्वाभाविक है। जाहिर है ये विवेचनाएं दिल्ली और बीजिंग की सोच को प्रभावित करती हैं। फिर भी गलवान का संकेत है कि हमें और गहरी पड़ताल करने की जरूरत है।

संकेताक्षर : तृतीय विश्व, वैश्विक, साम्राज्यवादी, विस्तारवादी, वैश्वीकरण, आतंकवाद।

I. प्रस्तावना

ऐसे समय में जब विश्व व्यवस्था को वैश्विक महामारी से निपटने के लिये आपसी सहयोग, समन्वय एवं सहभागिता की आवश्यकता है, विश्व व्यवस्था के दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन सीमा विवाद के कारण आपस में उलझे हुए हैं। हालिया विवाद का केंद्र अक्साई चिन में स्थित गालवन घाटी है, जिसको लेकर दोनो देशों की सेनाएँ आमने-सामने आ गईं हैं। इस घटना से पूर्व उत्तरी सिक्किम के नाथू ला सेक्टर में भी भारतीय व चीनी सैनिकों की झड़प हुई थी।

उपरोक्त घटनाएँ भारत-चीन के मध्य सीमा विवाद का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जो दोनों देशों के बीच रक्षा व सुरक्षा संबंधों की जटिलता को प्रदर्शित करते हैं। दोनों देशों के बीच संबंधों को व्यापक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। यह विदित है कि भारत और चीन दोनों ने लगभग एक-साथ साम्राज्यवादी शासन से मुक्ति पाई। भारत ने जहाँ सच्चे अर्थों में लोकतंत्र के मूल्यों को खुद में समाहित किया, तो वहीं चीन ने छद्म लोकतंत्र को अपनाया। भारत चीन सबंधों की इस गाथा में अनेक स्याह मोड़ आए। हिंदी-चीनी, भाई-भाई के नारे से लेकर वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध से होते हुए दोनों देशों के संबंध आज इस दौर में हैं कि भारत व चीन विभिन्न मंचों पर एक-दूसरे की मुखालफत करते नजर आते हैं।

भारत-चीन संबंधों का विकास - हजारों वर्षों तक तिब्बत ने एक ऐसे क्षेत्र के रूप में काम किया जिसने भारत और चीन को भौगोलिक रूप से अलग और शांत रखा, परंतु जब वर्ष 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर वहाँ कब्जा कर लिया तब भारत और चीन आपस में सीमा साझा करने लगे और पड़ोसी देश बन गए।

- 20वीं सदी के मध्य तक भारत और चीन के बीच संबंध न्यूनतम थे एवं कुछ व्यापारियों, तीर्थयात्रियों और विद्वानों के आवागमन तक ही सीमित थे।
- वर्ष 1954 में नेहरू और झोउ एनलाई ने "हिंदी-चीनी, भाई-भाई" के नारे के साथ पंचशील सिद्धांत पर हस्ताक्षर किये, ताकि क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिये कार्ययोजना तैयार की जा सके।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105031

- वर्ष 1959 में तिब्बती लोगों के आध्यात्मिक और लौकिक प्रमुख दलाई लामा तथा उनके साथ अन्य कई तिब्बती शरणार्थी हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में बस गए। इसके पश्चात् चीन ने भारत पर तिब्बत और पूरे हिमालयी क्षेत्र में विस्तारवाद और साम्राज्यवाद के प्रसार का आरोप लगा दिया।
- वर्ष 1962 में सीमा संघर्ष से द्विपक्षीय संबंधों को गंभीर झटका लगा तथा उसके बाद वर्ष 1976 मे भारत-चीन राजनयिक संबंधों को फिर से बहाल किया गया। इसके बाद समय के साथ-साथ द्विपक्षीय संबंधों में धीरे-धीरे सुधार देखने को मिला।
- वर्ष 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने द्विपक्षीय संबंधों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया शुरू करते हुए चीन का दौरा किया। दोनों पक्ष सीमा विवाद के प्रश्न पर पारस्परिक स्वीकार्य समाधान निकालने तथा अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करने के लिये सहमत हुए। वर्ष 1992 में, भारतीय राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन भारत गणराज्य की स्वतंत्रता के बाद चीन का दौरा करने वाले प्रथम भारतीय राष्ट्रपति थे।
- वर्ष 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने भारत-चीन संबंधों में सिद्धांतों और व्यापक सहयोग पर घोषणा पर हस्ताक्षर किये। वर्ष 2011 को 'चीन-भारत विनिमय वर्ष' तथा वर्ष 2012 को 'चीन-भारत मैत्री एवं सहयोग वर्ष' के रूप में मनाया गया।
- वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन का दौरा किया। इसके बाद चीन ने भारतीय आधिकारिक तीर्थयात्रियों के लिये नाथू ला दर्रा खोलने का फैसला किया। भारत ने चीन में भारत पर्यटन वर्ष मनाया।
- वर्ष 2018 में चीन के राष्ट्रपति तथा भारतीय प्रधानमंत्री के बीच वुहान में 'भारत-चीन अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' का आयोजन किया गया। उनके बीच गहन विचार-विमर्श हुआ और वैश्विक और द्विपक्षीय रणनीतिक मुद्दों के साथ-साथ घरेलू एवं विदेशी नीतियों के लिये उनके संबंधित दृष्टिकोणों पर व्यापक सहमति बनी।
- वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति बीच चेन्नई में 'दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' आयोजित किया गया। इस बैठक में, 'प्रथम अनौपचारिक सम्मेलन' में बनी आम सहमति को और अधिक दृढ़ किया गया।
- वर्ष 2020 में भारत और चीन के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 70 वीं वर्षगांठ है तथा भारत-चीन सांस्कृतिक तथा पीपल-टू-पीपल संपर्क का वर्ष भी है।

II. सहयोग के विभिन्न क्षेत्र

राजनीतिक तथा राजनयिक संबंध -

- भारत तथा चीन के शीर्ष नेताओं द्वारा दो अनौपचारिक शिखर सम्मेलन आयोजित किये गए तथा वैश्विक एवं क्षेत्रीय महत्त्व के मुद्दों पर गहन विचारों का आदान-प्रदान किया।
- दोनों देशों के बीच उच्च-स्तरीय यात्राओं का लगातार आदान-प्रदान, अंतर-संसदीय मैत्री समूह स्थापना, सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधियों की बैठक आदि का आयोजन समय-समय पर किया जाता रहा है।
- भारत तथा चीन के बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक चिंताओं के विभिन्न विषयों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिये लगभग 50 संवाद तंत्र हैं।

आर्थिक संबंध -

- 21 वीं सदी के प्रारंभ से अब तक भारत और चीन के बीच होने वाला व्यापार 3 बिलियन डॉलर से बढ़कर लगभग 100 बिलियन डॉलर (32 गुना) हो गया है। वर्ष 2019 में भारत तथा चीन के बीच होने वाले व्यापार की मात्रा 92.68 बिलियन डॉलर थी।
- भारत में औद्योगिक पार्कों, ई-कॉमर्स तथा अन्य क्षेत्रों में 1,000 से अधिक चीनी कंपनियों ने निवेश किया है। भारतीय कंपनियाँ भी चीन के बाजार में सक्रिय रूप से विस्तार कर रही हैं। चीन में निवेश करने वाली दो-तिहाई से अधिक भारतीय कंपनियाँ लगातार मुनाफा कमा रही हैं।
- 2.7 बिलियन से अधिक लोगों के संयुक्त बाजार तथा दुनिया के 20ः के सकल घरेलू उत्पाद के साथ, भारत और चीन के लिये आर्थिक एवं व्यापारिक सहयोग के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं। भारत में चीनी कंपनियों का संचयी निवेश 8 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी -

- भारतीय कंपनियों ने चीन में तीन सूचना प्रौद्योगिकी कॉरिडोर स्थापित किये हैं, जो सूचना प्रौद्योगिकी तथा उच्च प्रौद्योगिकी में भारत-चीन सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

रक्षा संबंध

- भारत तथा चीन के बीच हैंड-इन-हैंड युक्त आतंकवाद-रोधी अभ्यास के अब तक 8 दौर आयोजित किये जा चुके हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105031

पीपल-टू-पीपल कनेक्ट -

- दोनों देशों ने कला, प्रकाशन, मीडिया, फिल्म और टेलीविजन, संग्रहालय, खेल, युवा, पर्यटन, स्थानीयता, पारंपरिक चिकित्सा, योग, शिक्षा तथा थिंक टैंक के क्षेत्र में आदान-प्रदान तथा सहयोग पर बहुत अधिक प्रगति की है।
- दोनों देशों ने सिस्टर सिटीज तथा प्रांतों के 14 जोड़े स्थापित किये हैं। फुजियान प्रांत और तमिलनाडु को सिस्टर स्टेट के रूप में जबकि चिनझोऊ एवं चेन्नई नगर को सिस्टर सिटीज के रूप में विकसित किया जाएगा।

III. विवाद के बिंदु

- सीमा विवाद, जैसे- पैंगोंगत्सो मोरीरी झील का विवाद-2019, डोकलाम गतिरोध-2017, अरुणाचल प्रदेश में आसफिला क्षेत्र पर विवाद।
- परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह में भारत का प्रवेश, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता आदि पर चीन का प्रतिकूल रुख।
- बेल्ट एंड रोड पहल संबंधी विवाद, जैसे चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे विवाद।
- सीमा पार आतंकवाद के मुद्दे पर चीन द्वारा पाकिस्तान का बचाव एवं समर्थन।
- चीन ने हिंद-प्रशांत महसागरीय क्षेत्र में भारत की भूमिका पर भी असंतोष जाहिर किया है।

IV. सुझाव

- विवाद समाधान की रणनीतिदोनों देशों को नेताओं के रणनीतिक मार्गदर्शन का पालन करना चाहिये।
- मैत्रीपूर्ण सहयोग की सामान्य प्रवृत्ति को विकसित करने पर बल देना होगा।
- पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग की गति का विस्तार करना चाहिये।
- भारत व चीन को अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मामलों पर समन्वय को बढ़ाना चाहिये।
- दोनों देशों को आपसी मतभेदों का उचित प्रबंधन करना होगा।

सीमाओं को परिभाषित करने के साथ ही उनका सीमांकन और परिसीमन किये जाने की आवश्यकता है ताकि आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के भय को दूर किया जा सके और संबंधों को मजबूत किया जा सके। पिछले दस वर्षों के द्विपक्षीय व्यापार में चीन ने भारत के मुकाबले 750 बिलियन डॉलर की बढ़त बना ली है, जिसे कम करना बहुत आवश्यक है। व्यापार घाटे को कम करने में सेवा क्षेत्र एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

विश्व में चीन तथा भारत ऐसे देश है जिनकी जनसंख्या एक अरब से अधिक है तथा ये दोनों देश राष्ट्रीय कायाकल्प के ऐतिहासिक मिशन के साथ ही विकासशील देशों की सामूहिक उत्थान प्रक्रिया को गति देने में महत्त्वपूर्ण प्रेरक की भूमिका निभा सकते हैं। भारत और चीन के बीच की समस्याओं को अल्पावधि में हल किया जाना कठिन है, लेकिन मौजूदा रणनीतिक अंतर को न्यूनतम करने, मतभेदों को कम करने और यथास्थिति बनाए रखने जैसे उपायों से समय के साथ आपसी संबंधों को और बेहतर बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा, वी. के. एण्ड अप्पादोराय, इण्डिया इन वर्ल्ड अफेअर्स, स्ट्रेलिगं पब्लिशर्स प्रा. लि., न्यू देहली, 1975.
2. अवस्थी, रामकुमार, राजनीति शास्त्र के नये क्षितिज, द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 2019.
3. गुप्ता, कुरुनाकर, इण्डिया इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स ए पीरिअड ऑफ ट्रांजिशन, सांइटिफिक बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 1966.
4. चन्द्र रमेश, ग्लोबल टैरेरिज्म : ए थेट टू ह्यूमनिटी, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
5. प्रकाश, चन्द्र, इन्टरनेशनल रिलेशन्स, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., 1983.
6. प्रकाश, वेट, टैरेरिज्म अन इण्डियाज नॉर्थ-ईस्ट, ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
7. बघेल, वीरेंद्र सिंह, भारत पाक संबंधों पर अमेरिका का प्रभाव, गैलेक्सी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2021.
8. ब्रिचेर, माइकल, 'इण्डिया एण्ड वर्ल्ड पॉलिटिक्स', ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बोम्बे, 1968.
9. वर्मा, एस. पी. एण्ड मिश्रा के. पी. (सं.), 'फॉरन पॉलिसीज इन साउथ एशिया', ओरियन्ट लौंगमैन्स, बोम्बे, 2015.
10. .श्रीवास्तव, एन.के., भारत की विदेश नीति, साहित्य भवन, आगरा, 2012.
11. हार्ट, बी.एच. लिड्डेल, 'डिटेरेन्ट और डिफेन्स : ए फ्रेश लुक एट द वेस्टस मिलिटरी पोजीशन', स्टीवेन्स एंड सन्स, लन्दन, 1960.
12. हॉरोविट्ज, डोनाल्ड, सामुदायिक संघर्ष : नीति और संभावनाएँ, ईगल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1990.

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 5, September-October 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1105031

पत्र-पत्रिकाएँ

13. प्रतियोगिता दर्पण
14. सिविल सर्विसेज टाइम्स
15. क्रॉनिकल
16. योजना
17. कुरूक्षेत्र
18. इण्डिया टूडे

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com